भोगवाद का समाधान त्याग

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

आज का युग भोगवादी युग है। उत्पादन बढ़ाओ की माँग सर्वत्र हो रही है। बाजार में हर वस्तु बहुत अधिक मात्रा में आने लगी हैं। गांव–गांव, शहर–शहर में मोल बन गये हैं। हजारों तरह की वस्तुओं से बाजार पटा है। भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान संस्कृति है। इस संस्कृति में भोगवाद को महत्व नहीं दिया गया है। भोगवाद का तात्पर्य है– इन्द्रिय सुख तक सीमित रह जाना। हमारी संस्कृति में इन्द्रिय जगत से परे परमार्थ जगत की चेतना को जागृत करके आत्मतत्व को जानने का उपदेश दिया गया है। प्रायः रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा और चिकित्सा सभी मनुष्यों के लिए आवश्यक है। भोगवादी संस्कृति इन्द्रिय सुख से सम्बन्धित है। भारतीय संस्कृति आध्यात्मिक सुख से सम्बन्धित है। भोगवाद इन्द्रिय सुख को महत्व देता है। इस स्तर पर मानव और पशु में कोई अन्तर नहीं है। पशु भी इन्द्रिय सुख का अनुभव करता है।जितना भोगवाद बढ़ रहा है मनुष्य उतना ही परेशान हो रहा है। साज सज्जा से लेकर खाद्य पदार्थ तक सभी पदार्थों में भोगवाद को बढ़ावा मिल रहा है। बढ़ता हुआ भोगवाद तनाव को भी उत्पन्न कर रहा है। प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है। प्रदर्शन बढ़ रहा है। भौतिक पदार्थ नाशवान हैं। आत्मा अविनाशी है। हर वस्तु का विनाश होता है। वस्तुएं टूटती–जुटती रहती हैं। भोगवादी की यह विशेषता है कि जितना अधिक मन इसओर आकृष्ट होता है, उतना ही अधिक भोगवादी प्रवृत्ति बढ़ती है। पुनरुत्थान कार्यक्रम समस्या समाधान और सामाजिक उपयोगिता बताता है। भारतीय संस्कृति त्यागप्रधान संस्कृति है। त्यागवृत्ति के कारण ही विदेशियों ने भारतीय दर्शन को निराशावादी बताया है। किन्तु उनका यह आरोप ठीक नहीं है। उन्होंने भारतीय जनमानस को ठीक से समझा नहीं है। दुःख यहां प्रारम्भिक बिन्दु है, किन्तु सुख उसका पर्यावसान है। काम प्रारम्भिक बिन्दु है, किन्तु मोक्ष जीवन का अन्तिम लक्ष्य है।

मोक्ष भोग से नहीं त्याग से प्राप्त होता है। त्यागवृत्ति से एक अच्छा संसार बनता है। त्यागवृत्ति से मानव महान बनता है। समाज में बराबर का दर्जा सभी को प्राप्त होता है। भोगवृत्ति से भोगवाद को बढ़ावा मिलता है। मनुष्य को उतना ही उपभोग करना चाहिए जितनी आवश्यकता है।

आवश्यकता से अधिक उपयोग भोगवाद है। भोगवाद से गरीब और अमीर के बीच की दूरी बढ़ रही है। हमारे देश में बहुत से लोगों को खाने के लिए रोटी नहीं मिल रही है और बहुत से लोगों के पास इतनी वस्तुएं है कि वे खाकर अनेक बीमारियों को शिकार हो रहे है। तन का त्याग, मन का त्याग और धन के त्याग से मानव को समाज सेवा करनी चाहिए। समाज में जो व्यक्ति जिस योग्य है उसे वैसी सेवा करनी चाहिए। समाज को सहयोग करने से विसमता नहीं बढ़ती। भोगवाद विकासोन्मुखी होना चाहिए। लोगों की क्रय शक्ति को बढ़ाना चाहिए। यदि लोगों के पास पैसा ही नहीं रहेगा तो वे किस वस्तु का उपयोग करेंगें। भोगवाद से समाज में असमानता फेल रही है। अनेक नयी–नयी विसंगतियां भोगवाद का परिणाम है। संसार में भोगवाद के लिए आत्मोन्नति के लिए मानव है। यह भावना सभी की होनी चाहिए। मानवीय गुणों का विकास होना चाहिए। त्याग से परिवार समाज और सृष्टि आगे बढ़ती है। प्राकृतिक संतुलन ठीक रहता है। प्रकृति का अनुचित दोहन नहीं होता। भोगवादी की प्रवृत्ति अनेक बुराईयों को जन्म देती है। आजकल मानव की जीवनशैली में भोगवाद के कारण इतना बदलाव आ गया है कि वह अनेक बीमारियों का शिकार हो गया है।

पाश्चात्य संस्कृति भोगवादी संस्कृति है। वहां पर खाओ, पीयो और मस्त रहो को महत्व दिया जाता है। हमारी भारतीय संस्कृति में खाना–पीना, मस्त रहना कोई महत्व नहीं रखता। शहरों में इसी संस्कृति का प्रचलन है। बड़े–बड़े उपभोक्ता भंडारों में आकर्षक समान भरे पड़े रहते हैं। जब ग्राहक वहां जाता है तो आवश्यकता न रहने पर भी उन समानों की तरफ आकर्षित होता है और आवश्यक–अनावश्यक सभी वस्तुओं की खरीददारी करता है। वहां पर वस्तुओं की साज–सज्जा और रखने का ढ़ंग इस प्रकार से रहता है कि उनकी तरफ इन्द्रियां स्वयं ही आकर्षित हो जाती हैं। यह प्रचलन पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण है। आज से बीस तीस वर्ष पहले उपभोक्ता भंडारों का प्रचलन नहीं था। सड़कों के किनारे या बाजारों में दुकानें लगी

रहती थी। ग्राहक वहां जाकर अपनी आवश्यकता के अनुसार ही वस्तुएं खरीदता था। जितनी आवश्यकता होती थी उतना ही सामान खरीदा जाता था। आज के नये युग में वस्तुओं की भरमार है। लोग गुणवत्ता पर नहीं आकर्षण पर ज्यादा ध्यान देते हैं। बाजारे चीनी सामानों से भरी पड़ी हैं। चीन के बने हुए सामान सस्ते तो होते हैं, किन्तु टिकाऊं नहीं होते। कुछ समान तो ऐसे होते हैं कि एक बार के प्रयोग के बाद टूट–फूटकर बिखर जाते हैं। केवल पैसे का अपव्यय हो रहा है। कास्मेटिक और इस तरह के अन्य पदार्थों की भरमार इन भंडारों में रहती है। इन वस्तुओं के निर्माण में जीव हिंसा होती है। ये पदार्थ कैसे बनते हैं, उपभोक्ताओं को इसका ज्ञान नहीं होता। इसलिए इसका प्रयोग करते रहते हैं। इन भंडारों में एक ही छत के नीचें प्रायः उपभोग की सभी वस्तुएं इकट्ठा मिल जाती हैं, इसीलिए ग्राहक भी इनकी तरफ अधिक आकर्षित होते हैं। भारतीय दृष्टि से इसका उतना महत्व नहीं है, जितना अध्यात्मवाद का है। भारतीय जीवन दृष्टि संयम की दृष्टि है। यहां सादा जीवन और उच्च विचार को महत्व दिया जाता है।